(1) [ ] + [5] = [5]

पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

"प्र० नं० 1 का उत्तर"

(ii)

संकेत :- अथ - - - - - - - - - - कार्यः ।

अनुवाद :- इस प्रकार उन दोनों में प्रगाढ़ मित्रता होने पर करटक और दमनक के आहार दान में भी सम्मान कम हुआ। तब कभी उन्होंने सोचा क्यों न मित्रता विच्छेद का कार्य करना चाहिए। तब दमनक शेर के समीप गया और हाथ जोड़कर बोला देव, मैं किसी भय को देखकर आ रहा हूँ। सञ्जीवक आपसे द्वेष करता है। तो उससे सम्बन्धविच्छेद का कार्य करना चाहिये।

5

(iii)

संकेत :- अनन्तरे - - - - - - - - - - - समादिशत।

5

अनुवाद :- इसी बीच भगवान ब्रम्हा मुनि को देखने के लिये वहाँ आये। यह देखकर आश्चर्य-चकित होते हुए बाल्मीकि सहसा

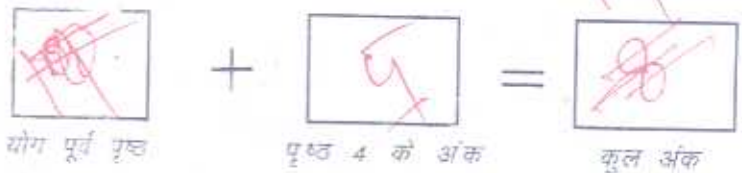

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

हाँथ जोड़कर खड़े हो गये।
इसके बाद मुनि नें भगवान के चरण धोए, वन्दना की और पूजा करने के बाद उन्हें दिव्य आसन में बिठाया। इस प्रकार भगवान नें आसन में बैठकर वाल्मीकि को भी आसन में बैठनें का आदेश दिया।

"प्र० नं० 2 का उत्तर"

(i)

संकेत :- अज्ञः - - - - - ..... रञ्जयति।

अनुवाद :- अज्ञानी व्यक्ति को सरलता से प्रसन्न किया जा सकता हैं। विशेषज्ञ या विद्वान व्यक्ति को और भी अधिक सरलता से प्रसन्न किया जा सकता हैं परन्तु अल्पज्ञानी और मिथ्याज्ञानी व्यक्ति को ब्रम्हा भी प्रसन्न नहीं कर सकते हैं।

5 १० 9 + 5 = 15

योग पूर्व पृष्ठ | पृ० 5 के अंक | कुल अंक

(iii)

संकेत :- नीहार .... हव्यवाहनं।

अनुवाद :- हेमन्त ऋतु के समय में संसार बर्फ से भी कठोर हो गया है, पृथ्वी खेती से हरी-भरी हो गई है। जल उपभोग करने योग्य नहीं रहा है तथा अग्नि अच्छी लगने लगी है।

B S E M P

"प्र० नं० 3 का उत्तर"

(i) धनस्य कति गतयः भवन्ति।

उ०:- धन की तीन गति होती हैं, दान, भोग और नाश।

5

(iii) दिलीपः प्रजानां पिता कथं कथितः।

उ०:- दिलीप प्रजा का भरण पोषण, उन्हें शिक्षित करने तथा उनकी रक्षा करने के लिये उनके पिता कहे जाते थे।

5

पृष्ठ के अंकों का योग

(6) 13 + 3 = 16

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 6 के अंक — कुल अंक

(IV) उन्नतो धन: किं करोति ?
उ०:- उपर रहने वाले बादल सभी लोगों के ताप को हरते हैं।

(V) नचिकेता कस्य पुत्र: आसीत् ।
उ०:- नचिकेत उद्दालक का पुत्र था।

(VII) सर्वोतमं भूषणं किम अस्ति ?
उ०:- सर्वोतम आभूषण वाणी का आभूषण होता है।

"दो नीति श्लोक" प्र० नं० 4 का उत्तर

(i)
धनिक: श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पन्चम:।
पन्च यत्र न विद्यन्ते तत्र वासं न कारयेत् ॥

(ii)
नरस्याभरणं रूपं, रूपस्याभरणं गुण:।
गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा ॥

7

पृष्ठ के अंकों का योग

7

18	+	5	=	23
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 7 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

"प्र०नं० 5 का उत्तर"

(i) सज्जन ⇒ सत् + जनः
संधि का नाम :- व्यंजन संधि

(iii) तल्लीनः ⇒ तत् + लीनः
संधि का नाम :- व्यंजन संधि

(iv) मतिरेव ⇒ मतिः + एव
संधि का नाम :- विसर्ग संधि

प्र०नं० 6 का उत्तर

(i) वाक् + ईशः ⇒ वागीशः
संधि का नाम ⇒ व्यंजन संधि

(iii) सः + अपि ⇒ सोऽपि
संधि का नाम ⇒ विसर्ग सन्धि

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग 5

8 | 23 | + | 6 | = | 29

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 8 के अंक | कुल अंक

"प्र० नं० 7 का उत्तर"

(ii) पंचवटी ⇒ पंचानां वटानां समाहार:
समास का नाम ⇒ द्विगु समास

(iii) घनश्याम: ⇒ घन इव श्याम:
समास का नाम ⇒ कर्मधारय समास

(iv) पीताम्बर: ⇒ पीतं अम्बरं यस्य स:
समास का नाम ⇒ बहुव्रीहि समास

"प्र० नं० 8 का उत्तर"

(i) नामन् द्वितीया विभक्ति

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	नाम्	नाम्नी	नामानि

(ii) फल् पंचमी विभक्ति

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्य:

6

9 | 29 + 3 = ~~29~~ 32
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 9 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

(iii) धेनु प्रथमा विभक्ति

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः

"प्र० नं० 9 का उत्तर"

(i) गम् धातु, उत्तम पुरुष, लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

(ii) स्पृश् धातु, अन्य पुरुष लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ० पु०	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु

B S E M P

3

पृष्ठ के अंकों का योग

(10) 32 + 4 = 36

(iii) प्रच्छ धातु, विधिलिङ् लकार, अन्य पुरुष

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ॰पु॰	प्रच्छेत	प्रच्छेताम्	प्रच्छेयु:

"प्र॰ नं॰ 10 का उत्तर"

(ii) गमिष्यति ⇒
गम् धातु लृट् लकार
{भविष्य काल}

(iii) कुर्वन्ति ⇒
कृ धातु लट् लकार
{वर्तमान काल}

"प्र॰ नं॰ 11 का उत्तर"

(i) गच्छन् ⇒ [illegible]
गम् धातु शतृ प्रत्यय

(iii) पठितवान् ⇒
पठ् धातु क्तवतु प्रत्यय

B S E M P

4

(11)

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 11 के अंक		कुल अंक
36	+	9	=	45

"प्र० नं० 12 का उत्तर"

(i) तत्र ⇒ [illegible] ।
सः तत्र प्रतिदिनम् गच्छति ।

(ii) अद्य ⇒ अद्य सोमवासरः अस्ति ।

"प्र० नं० 13 का उत्तर"

(i) सः गच्छसि
शुद्धवाक्य ⇒ सः गच्छति ।

(iii) त्वं फलं खादति ।
शुद्धवाक्य ⇒ त्वं फलं खादसि ।

"प्र० नं० 14 का उत्तर"

(ii) विद्या विनय देती है ।
अनुवाद :- विद्या विनयं ददाति ।

(iii) भारत हमारा देश है ।

अनुवाद :- भारतः अस्माकम् देशः अस्ति ।

B S E M P

9
पृष्ठ के अंकों का योग

(IV) वह घर जाता है।
अनुवाद :- सः गृहं गच्छति ।

(V) आत्मा जल से शुद्ध नहीं होती।
अनुवाद :- आत्मा जलेन न शुद्ध्यति ।

(VI) श्री गणेश को नमस्कार है।

अनुवाद :- श्री गणेशाय नमः ।

"प्र० नं० 15 का उत्तर"

"सदाचारः"

(1.) सताम् आचारः सदाचारः इति उच्यते।

(2.) सज्जनाः विद्वांसश्च यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचारः भवति।

(3.) ते सर्वे सह शिष्टता पूर्वक व्यवहारं कुर्वन्ति।

(4.) ते सत्यं वदन्ति, असत्य भाषणात् विरमन्ति।

BSEMP

5
पृष्ठ के अंकों का योग

(13) योग पूर्व पृष्ठ 50 + पृष्ठ 13 के अंक = कुल अंक 50

(5.) ते ज्येष्ठानां, गुरूणां, माता, पिता: च आदरं कुर्वन्ति।

(6.) तेषां आज्ञां पालयन्ति।

(7.) सदाचारिण: इव जना: उन्नति: कुर्वन्ति।

(8.) सदाचारिण: इव बुद्धि: निर्मला: भवन्ति।

(9.) सदाचारस्य महत्वं सम्पूर्ण जगत् दृश्यन्ते।

(10.) ये जना: सदाचारिण: इव भवन्ति ते जना: श्रेयं लभन्ते।

अत: उक्तञ्च मनुना :-

श्रुति: स्मृति: सदाचार: स्वस्य च प्रियमात्मन:
एतच्चतुर्विधं प्राहु: साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥

50

50

50